Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept of Philosophy
H.D. Jain College, Ara

M.A - II Sem. Philosophy
CC-09 - Indian Linguistic trends

1. Metaphysical basis of linguistic trends in Indian Philosophy

भारतीय दर्शन में "भाषा विश्लेषण" का तात्विक आधार।

भारतीय दर्शन के संदर्भ में वाक्य में निहित शब्द तत्वमीमांसीय भी होते हैं अर्थात वाक्य का अर्थ तत्वमीमांसा की दृष्टि से भी जाना जाता है। इसप्रकार भारतीय दर्शन के अन्तर्गत भाषाविश्लेषण का तात्पर्य तत्वमीमांसीय कथनों, ज्ञानमीमांसीय (संज्ञानात्मक) कथनों क्रियात्मक (नैतिक) कथनों, उच्चारण शास्त्र / व्युत्पत्तिशास्त्र, तार्किक विन्यास वाक्य तथा अर्थमीमांसक कथनों का विश्लेषण है। पाश्चात्य दर्शन के अन्तर्गत भाषा विश्लेषण वाक्य विन्यास, तार्किक विन्यास, उच्चारणशास्त्र और अर्थमीमांसा तक ही सीमित है। अतः भाषाविश्लेषण के क्षेत्र में भारतीय दर्शन पाश्चात्य दर्शन की अपेक्षा अधिक व्यापक है।

भारतीय भाषाविश्लेषण का आरम्भ यास्क के निरुक्त से माना जाता है जबकि पाश्चात्य भाषाविश्लेषण का प्रारम्भ विटगेन्स्टाइन के ट्रैक्टेटस से माना जाता है। यास्क का काल सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है जबकि विटगेन्स्टाइन का काल बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध है।

यास्क के निरुक्त में भाषाविश्लेषण का व्युत्पत्तिपरक स्वरूप पाया जाता है जबकि विट्गेन्स्टाइन के दर्शन में भाषाविश्लेषण का अर्थमीमांसा स्वरूप पाया जाता है। दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में भाषाविश्लेषण का तात्पर्य अर्थमीमांसा से ही लिया जाता है। इस प्रकार से भारतीय दर्शन के अन्तर्गत भर्तृहरि की पुस्तक "वाक्यपदीय" को ही भाषाविश्लेषण का प्रथम ग्रंथ माना जा सकता है। भर्तृहरि का काल पाँचवी शताब्दी है। अतएव भारतीय दर्शन में भाषाविश्लेषण अत्यन्त प्राचीन है, जबकि पाश्चात्य दर्शन में यह अत्यन्त नवीन है।

भारतीय दर्शन के अंतर्गत भाषाविश्लेषण का स्वरूप जिस रूप में प्रतिष्ठित है, वस्तुतः पाश्चात्य दर्शन में भाषाविश्लेषण का वह स्वरूप नहीं पाया जाता है। पाश्चात्य भाषाविश्लेषण शब्द और अर्थ के सम्बन्ध को बतलाना ही इतिश्री समझता है। साधारण भाषा और दार्शनिक भाषा के रूप में शब्दार्थ और वाक्यार्थ की विवेचना की जाती है। लेकिन भारतीय भाषा विश्लेषण शब्दार्थ और वाक्यार्थ तक ही सीमित नहीं है। इसमें व्याकरण के विषयों की भी समीक्षा की जाती है। अतएव विषय की दृष्टि से भी भारतीय भाषाविश्लेषण अपेक्षाकृत व्यापक है।

भारतीय भाषाविश्लेषण के

नवीन भारतीय दर्शन के नास्तिक और आस्तिक सम्प्रदायों में भी देखा जा सकता है। आस्तिक सम्प्रदाय के अन्तर्गत भारतीय भाषाविश्लेषण का आरम्भ न्याय दर्शन के प्रणेता गौतम से माना जा सकता है। नव्य-न्याय के प्रवर्त्तक गंगेश उपाध्याय की तत्त्वचिन्तामणि भारतीय भाषाविश्लेषण की प्रामाणिक पुस्तक मानी जाती है। न्याय दर्शन के पश्चात भाषाविश्लेषण की दृष्टि से मीमांसा दर्शन प्रमुख है। न्याय दर्शन और मीमांसा दर्शन शब्द-विवेचन में कई बिन्दुओं पर परस्पर असहमत हैं। अतएव भारतीय भाषाविश्लेषण को समझने के लिए इन दोनों दर्शनों का अध्ययन आवश्यक है। जैन दार्शनिक हेमचन्द्र की पुस्तक शब्दानुशासन तथा मल्लीसेन की स्याद्वादमंजरी में भाषाविश्लेषण का विचार पाया जाता है। बौद्ध दार्शनिक दिङ्नागाचार्य, धर्मकीर्ति की पुस्तकें क्रमशः प्रमाणसमुच्चय और प्रमाणवार्तिक भाषाविश्लेषण की चर्चा करती हैं। इसी प्रकार रत्नकीर्ति की अपोहसिद्धि, शान्तरक्षित की तत्त्वसंग्रह-पञ्जिका एवं कमलशील की तत्त्वसंग्रहपञ्जिका में भी भाषाविश्लेषण की विवेचना पायी जाती है।

वेदान्त एवं अलंकार शास्त्र की दृष्टि से भी देखा जाय तो

भाषा विश्लेषण की शुरुआत बृहत्तर भारत (अखंड भारत) में प्राचीन काल से रही है। नाट्यशास्त्र की भारती टीका आदि, जहाँ राजा कुमारेन्द्र की वेदान्त परम्परा में मिलती है। यह कहानी को भर्तृहरि ने भी स्फोटवाद के रूप में भाषा का विश्लेषण किया है। आनन्दवर्धन के ध्वन्यालोक पर अभिनवगुप्त ने लोकलोचन नामक टीका लिखी।

भाषा विश्लेषण के बीज वैदिक ग्रंथों में पाया जाता है। वैदिक ग्रंथों के अन्तर्गत वेद, स्मृति, पुराण आदि आते हैं। उपनिषद ग्रंथों तथा योग की पुस्तकों में भी भाषा विश्लेषण का बीज देखा जा सकता है। जैसे — षट्चक्र निरूपण, हठयोग प्रदीपिका नामक पुस्तकें।

किसी वस्तु का परिचय भाषा द्वारा ही संभव है। भाषा की अभिव्यक्ति वाणी या वाक् है। यही कारण है कि ऋग्वेद के ऋषियों ने भाषा, वाक्, वाणी की सम्भावनाओं को माना है और 'शब्द' देवता की संज्ञा दी गयी है। वाणी को देवी के रूप में प्रस्तुत कर उसके मुँह से कहलवाया है कि वाणी ही सब भुवनों का निर्माण करती है तथा धरती और वायु के समान चलती और द्युलोक से भी बड़ी है। वाणी या भाषा का ज्ञान सरस्वती की कृपा से ही संभव है। सरस्वती का

विद्या या ज्ञान की देवी माना जाता है। अथर्ववेद में कहा गया है कि "वाक देवी सरस्वती हमारे सम्मुख है।" इसका तात्पर्य अनुपम है। वाक या वाणी को देवी कहा गया है और उसे सरस्वती की संज्ञा दी गयी है। सामवेद में भी सरस्वती का प्रतीक माना गया है, क्योंकि गायत्री आदि सात छन्द एवं गंगा आदि नदियाँ की तरह सदैव हमारी मनोकामनाएँ पूरी करती है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि वाक परम सत्ता है। ऐतरेय ब्राह्मण में भी वाक या भाषा को परमसत्ता की संज्ञा दी गयी है।" बृहदारण्यक उपनिषद में भाषा या वाक को सर्वोच्च देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।" तैत्तिरीय संहिता में कहा गया है कि इन्द्र ने वाक या भाषा का विश्लेषण किया और तब से भाषा विश्लेषण की उत्पत्ति हुई। मनुस्मृति में अक्षर (भाषा) को ब्रह्म और प्रजापति की संज्ञा देकर उसे अविनाशी बतलाया है। इस प्रकार भारतीय भाषा विश्लेषण का बीज स्पष्टतः वैदिक ग्रंथों में निहित है।

भाषा का स्वरूप:—

"बैल" की संज्ञा दी गयी है। ऋगवेद में भाषा को कहा गया है कि एक बैल ऊँचे स्वर में शब्द कर रहा है। यह विलक्षण प्रकार का बैल है जिसके चार सींग, तीन पैर, दो सिर और सात हाथ हैं। इसे तीन स्थानों

में (ओंकार से) बाँधा गया है। यह
बात कही है कि महादेव मर्त्यों में यह
सही है। नहीं भाषा की उपमा बैल से
दी गई है। अतः भाषा की तुलना
बैल के समान है। इसके शब्दों में विविधता
के समान संबंध द्वारा भाषा (और उसके)
के अभिव्यक्ति को बतलाया गया है।
वस्तुतः बैल के चार सींग से चार प्रकार
के शब्द-समूह का संकेत किया गया
है। वे शब्द-पद हैं - नाम, क्रिया, उपसर्ग
और निपात। बैल के तीन पैर काल
है काल के तीन पद - भूत, वर्तमान और
भविष्य। दो सिर का तात्पर्य भाषा के
दो स्वरूप से है - नित्य (स्फोट)
और अनित्य (ध्वनि)। सात हाथ
सात विभक्तियों (कारकों) का द्योतक है
बैल का तीन स्थानों में बंधा होना
बतलाता है कि भाषा की अभिव्यक्ति
उच्चारण द्वारा होती है और उच्चारण
की प्रक्रिया का आरम्भ हृदय से होता है
फिर कंठ और फिर मूर्धा (शिरस) में
आने के पश्चात वायु की गति से
ध्वनियों का उच्चारण होता है। भाषा
की अभिव्यक्ति ध्वनि द्वारा उच्चारण के
माध्यम से होती है और उरस्थ वायु
का प्रवाह कंठस्थ होते हुए तालु,
जिह्वा आदि उच्चारण-स्थानों में
प्रवेश करने के पश्चात ही ध्वनि वायु-
वेग से उच्चरित होती है। महादेव
मर्त्यों में अवतरित हुए है का

तात्पर्य परम भाषा (स्फोट या शब्द-ब्रह्म) ही साधारण भाषा (लौकिक भाषा) में अभिव्यक्त होती है। अतएव परम भाषा या परम तत्व (शब्द-ब्रह्म) तक पहुँचने के लिए साधारण भाषा का ज्ञान आवश्यक है। वेद के चार सींग का तात्पर्य भाषा के चार स्तर से भी है- परा, पश्यन्ती, मध्यमा और बैखरी। परा शब्द ब्रह्म है। बैखरी साधारण भाषा है। यह बोलचाल की भाषा है। मध्यमा प्रेम और भक्ति की भाषा है। पश्यन्ती अन्तर्मन और अन्तर्ध्यान की भाषा है। परा सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ और परम भाषा है।

ऋग्वेद के उक्त सूक्त का अर्थ स्पष्ट करता है कि भाषा के दो स्वरूप हैं- पारमार्थिक या तत्वमीमांसीय और व्यावहारिक या वैयाकरण। भाषा का तत्वमीमांसीय स्वरूप शब्दब्रह्म या स्फोट है। यह मात्र एक अविभाज्य अवयवहीन (निरवयव) पूर्ण और अद्वितीय है, इसे अक्षर भी कहा जाता है। भाषा का वैयाकरण रूप व्याकरणशास्त्र या व्याकरण दर्शन का पर्याय है। व्याकरण शास्त्र के (संस्कृत) अनुसार भाषा वह है जो विचार, भाव और संवेग को शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करती है। वस्तुतः भाषा का तात्पर्य ही शब्द है। इसलिए भाषा दर्शन का तात्पर्य शब्द दर्शन है। भाषा या शब्द-दर्शन के अन्तर्गत भाषा अर्थात शब्द

12 MON JAN

का विश्लेषण होता है। इसलिए भाषा कथन का आप्त विश्लेषण भी कहते हैं। भाषा का विश्लेषण करने पर ज्ञानी इकाई आधार के रूप में प्राप्त होती है, क्योंकि शब्द ही अक्षर से बनते हैं। शब्द का अर्थ केवल पद नहीं होते, बल्कि वाक्य भी है। कहा गया है कि आप्तोपदेशः शब्दः अर्थात आप्त पुरुष (विश्वसनीय या प्रामाणिक व्यक्ति) का उपदेश या वचन शब्द है। उपदेश वाक्यों में दिये जाते हैं। अतएव वाक्य शब्द है। वाक्य का प्रयोग में तीन कालों और सात विभक्तियों में होता है। वाक्यों में एक ~~शब्द~~ पद (शब्द) या अनेक पदों (शब्दों) का प्रयोग होता है। ये पद संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय होते हैं। कोई भी पद क्रिया (धातु) में उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर बनता है। अतएव व्याकरण शास्त्र के अंतर्गत संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय, उपसर्ग, प्रत्यय, कारक, काल आदि का अध्ययन होता है। ये सभी भाषा के संरचनात्मक तत्व हैं। इनके साथ ही किसी शब्द का उच्चारण और उसमें ध्वनि के उतार चढ़ाव का व्यवस्थित क्रम के नियम भी होते हैं। इसकी जानकारी भी व्याकरण शास्त्र में मिलती है। व्याकरण शास्त्र का यह अंश उच्चारण-शास्त्र या ध्वनिशास्त्र कहलाता है।

किन्तु उच्चारण या ध्वनि से जिन शब्दों या वाक्यों को अभिव्यक्त किया जाता है, उनके अर्थ उच्चारण या ध्वनि-क्रम के अनुकूल ही अभिव्यक्त होते हैं। इसलिए किसी शब्द या वाक्य के सही अर्थ जानने के लिए उच्चारण का सही-सही प्रयोग आवश्यक है। व्याकरणशास्त्र का वह भाग जो बतलाता है कि शब्द या वाक्य के अर्थ की अभिव्यक्ति किस प्रकार होती है अर्थ-मीमांसा या शब्दार्थ मीमांसा कहलाती है। उच्चारणशास्त्र, ध्वनिशास्त्र, अर्थमीमांसा एवं संरचनात्मक व्याकरण शास्त्र ये सभी साधारण भाषा या वैयाकरण के अंग हैं।

भाषा का महत्त्व :- भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी बात समझा पाते हैं। 'भाषा' ही वह माध्यम है जो ईश्वर, ब्रह्म और आत्मा आदि जैसे अमूर्त एवं अलौकिक सत्ताओं से हमारा परिचय कराती है। इस प्रकार भाषा ही सम्पूर्ण सृष्टि का आधार है। दण्डी के शब्दों में, "भाषारूपी ज्योति के कारण सारे संसार (तीनों लोकों) में प्रकाश फैला हुआ है।" प्रकाश का अर्थ यथार्थ ज्ञान है। दूसरे शब्दों में, असंदिग्ध ज्ञान, भाषा के सही नियमों को जानने और पालन करने से ही संभव है अन्यथा अस्पष्ट, संदिग्ध एवं भ्रमजन्य ज्ञान प्राप्त होता है। अतएव भाषा ईश्वरीय शक्ति या असीम

और है। पशु-पक्षियों
पेड़-पौधों की भाषा कुछ-कुछ
भाषा के समान सांकेतिक होते हैं।
सांकेतिक भाषा को ध्वन्यात्मक भी
कहते हैं क्योंकि इसमें केवल ध्वनि
माध्यम द्वारा संकेत प्रदान किया जाता है।
जैसे - पशु-पक्षियों, नदी-झरने की भाषा
साधारण ध्वनित उच्चारण द्वारा ध्वनि
की सहायता से भाषा का प्रयोग करता है
यह भाषा ध्वन्यात्मक होते हुए भी बाद्धक
होती है। अतएव भाषा सांकेतिक और
शाब्दिक दोनों होती है और भाषा के
दोनों अर्थों को समझना आवश्यक
है। अर्थ समझने के लिए भाषा का
विवेचन या विश्लेषण अनिवार्य है।
संभवत: इसी तथ्य को ध्यान में रखकर दंडी
ने अपनी पुस्तक काव्यादर्श में भाषा
"शिष्टानुशिष्टानाम" कहा है। शिष्टानुशिष्ट
नाम" का अर्थ है ऐसे शब्द जो शिष्ट
समाज द्वारा स्वीकृत और वैयाकरणों
के नियमों से प्रमाणित है। शिष्ट समाज
का तात्पर्य ऐसा समाज से है जो
भाषा को जानता है, भाषा को जानने वाला
ही वैयाकरणों द्वारा प्रतिपादित प्रामाणिक
नियमों को समझ सकता है। यही
कारण है कि ऋग्वेद का ऋषि उन्हें
अज्ञानी मानता है जो "भाषा को
देखकर भी नहीं देखता है, भाषा
को सुनकर भी नहीं सुनता है।" यद्यपि
इन शब्दों का अर्थ है कि

भाषा के सभी स्वरूपों - ध्वन्यात्मक, संरचनात्मक, उच्चारणपरक, अर्थात्मक आदि को जानने और समझने के पश्चात ही कोई सही मायने में भाषा विद या ज्ञानी हो सकता है। भाषा का ज्ञान व्याकरण के माध्यम से ही संभव है। यही कारण है कि भाषा दर्शन को व्याकरण दर्शन की संज्ञा दी जाती है। आयंगार की मान्यता है कि "प्राचीन काल में भाषा का व्यवहार तो हो रहा था पर इसका विवेचन - विश्लेषण नहीं हुआ था। इस विश्लेषण (भाषा का विश्लेषण) का नाम ही "व्याकरण" है। वैदिक काल में भाषा अव्याकृत रही होगी। फलतः कतिपय विद्वानों को इसके विश्लेषण की आवश्यकता प्रतीत हुई। उन विद्वानों ने "इन्द्र" से इस कार्य के सम्पादन का दायित्व वहन करने की प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना स्वीकार कर इन्द्र ने भाषा - विवेचन (विश्लेषण) के लिए एक व्याकरण की रचना की। इस व्याकरण का नाम "ऐन्द्र व्याकरण" है जो भारतीय भाषा विश्लेषण की प्रथम पुस्तक मानी जाती है। परन्तु आज यह पुस्तक अलभ्य है। इन्द्र के जन्म, देश, काल, ग्रंथ और आदि के विषय में हम पूर्णतः अनभिज्ञ हैं। किंवदन्ती है कि तमिल भाषा का प्रथम व्याकरण "तोल्काप्पियम्" ऐन्द्र व्याकरण से प्रभावित है। परन्तु पाणिनि ने अपनी पुस्तक अष्टाध्यायी में इन्द्र और ऐन्द्र व्याकरण का उल्लेख नहीं किया है, जबकि अपने पूर्ववर्ती दस आचार्यों का नाम उल्लेखित किया है जिनमें प्रमुख हैं - शाकटायन और गार्ग्य। शाकटायन व्युत्पत्तिवादी थे, जबकि गार्ग्य अव्युत्पत्तिवादी थे।